ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्ष: 88 अंक 18
आषाढ़ कृष्णा नवमी
विक्रम संवत 2071
कलि संवत 5115
21 जून से 5 जुलाई 2014 तक
दयानन्दाब्द 190
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 115

मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

संपादक मंडल:
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजय सिंह भाटी, जोधपुर
डॉ. सुधीर आर्य, बगरू
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुन देव चड्ढा, कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा, जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य, अलवर

प्रकाशक:
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- 0141-2621879

प्रकाशन: दिनांक 1 व 15

पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेठ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018

मुद्रक:
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर

ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दारूकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com

एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

क्या पाप क्षमा हो जाते हैं?

यह शंका प्राय: की जाती है कि क्या पाप क्षमा हो जाते हैं? जो सेमेटिक मजहबों के है, वे सब यही मानते हैं कि उनका पैगम्बर व नबी अपने मुरीदों के सब गुनाहों को ले सूली पर चढ़ गया व दुनियाँ से कूच कर गया। अपने पीर-पैगम्बर पर पूरा इतकाद करने से कुल गुनाहों से मुआफी के साथ बहिश्त व नजात भी मिल जाएगी। हिन्दूओं के पुराणों ने तो पाप से छूटने और स्वर्ग प्राप्ति का ईसाइयत-इसलाम से भी अधिक सस्ता, सहज, सरल तरीका ढूँढ़ निकाला। बिना किसी देवी-देवता पर विश्वास किये, पुराणों के अनुसार-

गंगा गंगेति यो ब्रूयाद योजनानां शतैरपि। मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।।

पद्म पुराण उत्तरखंड २३/२

हजारों कोस दूर बैठे भी यदि कोई व्यक्ति 'गंगा-गंगा' यह शब्द बोल दे तो कितना भी पापी क्यों न हो, वह सब पापों से छूट सीधा विष्णुलोक पहुँच जाएगा।

मुक्ति और पापों से छूटने का कितना सहज-चुटकी भरा-यह नुस्खा सब मजहबों को मात कर गया है। सचमुच, यह नहले पर दहला है। पर क्या, वस्तुत:, किसी पीर-पैगम्बर, अवतार पर विश्वास लाने, कोई शब्द विशेष बोलने, शरीर को चक्रांकितों की तरह दागने, वैष्णव-शैवों की तरह माथे पर उलटी-सीधी रेखाएँ खींचने, कंठी, माला, कड़ा, तावीज इत्यादि धारण करने व मूक, निर्दोष पशुओं की हिंसा से पाप क्षमा हो सकते हैं? क्या किसी विशेष नदी, नाले, स्रोत इत्यादि में स्नान करने से पाप छूट जाते हैं? वस्तुत:, यह सब पूर्णरूप से आत्म प्रवंचन ही है। गालिब के शब्दों में-

खूब मालूम है जन्नत की हक़ीकत लेकिन, दिल बहलाने को गालिब यह ख्याल अच्छा है।

ईश्वर को धोखा देने के ढोंग:-संसार के व्यवहार में कई लोग रिश्वत देकर अपना काम निकाल लेते हैं। मनुष्य यह समझता है कि इस रिश्वत के जादू से वह परमात्मा को रिझा लेगा। अपने पापों को छिपाने व उनके फल से अपने को बचाने के लिए वह अपने-अपने धार्मिक विश्वासों के अनुसार अनेक प्रकार के ढोंग करता है। तीर्थ स्थानों की यात्रा, कब्र-मजारों की पूजा, दरगाहों पर चादर चढ़ाना, सेवियां चढ़ाना, विविध प्रकार के और विशिष्ट अवसरों पर पूजा-पाठ, दान, यज्ञ, अखण्ड कीर्तन, इष्ट पूर्ति के लिए मंदिरों, पूजा स्थानों पर चढ़ावा इत्यादि अनगिनत प्रकार के व्ययसाध्य और कष्टप्रद ढौंग किए जाते हैं। कुछ समृद्ध व्यक्ति किसी पण्डित-पुरोहित को प्रतिदिन घर में आकर पूजा-पाठ-जाप आदि करने के लिये मासिक वेतन देकर अपने को धर्मात्मा समझने का गर्व करते हैं।

आज के युग में गुरु-चेला लीला का जोर है। हवाई जहाजों और जेट विमानों पर यात्रा करने, विदेशों में जो शिष्य-शिष्याएँ मूंड़ने, बड़े आलीशान ढंग से रहने, अंग्रेजी में भाषण देने, बढ़िया होटलों में ठहरने, संसार के सब भोग करते हुए भी 3 महीने में योग विद्या में पारंगत कर देने और ईश्वर दर्शन कराने का दावा करने वाले- पहले से निश्चित करके ही (एप्वायन्टमेंट से) एकान्त में मिलने इत्यादि ढोंगों में चतुर कनफुकवे गुरुओं की आजकल बड़ी चर्चा है। ये लोग एजेन्टों, समाचारपत्रों तथा अपने भव्य, मनमोहक चित्रों के साथ आकर्षक पुस्तक-पुस्तिकाओं इत्यादि प्रचार के आधुनिक

क्या आप देश की उन्नति के लिए जी रहे है?

माध्यमों से पहले इश्तिहारबाजी देश-विदेश में करते- कराते हैं। इनका विशेष लक्ष्य धनी व्यापारी, उच्च सरकारी नौकर, मंत्री, विधान सभा व संसद सदस्य, सुन्दर युवतियाँ इत्यादि को अपने जाल में फंसाना होता है। भारत में कुछ ऐसे भी तथा कथित गुरु आज अपना जाल बिछाने में सक्रिय हैं जिन्हें विदेशी संस्थाओं से इसलिए गुप्त सहायता मिलती है ताकि वे भारत के नैतिक पतन में सहायता दें। कई चोर-बाजारिये और तस्करिये अपने काले धन को श्वेत रूप देने के लिए इन आधुनिक योगियों और गुरुओं का पल्ला पकड़ लेते हैं।

पहले पाप, फिर बचने के छल-कपट :- मनुष्य पहले पाप करता है, फिर उसके फल से बचने के लिए कितना छल-कपट करता है। महाभारत वनपर्व में यक्ष-युधिष्ठिर संवाद में यक्ष के इस प्रश्न का कि 'संसार में क्या महान आश्चर्य है?' युधिष्ठिर कितना सार्थक उत्तर देता है-

(1) फलं पापस्य नेच्छन्ति पापं कुर्वन्ति यत्नतः।
फलं पुण्यस्य चेच्छन्ति पुण्यं न कुर्वन्ति सर्वथा।।

(2) धर्म प्रसंगादपि नाचरन्ति, पापं प्रयत्नेन समाचरन्ति।
आश्चर्यमेतत् हि मनुष्यलोकेऽमृतं परित्यज्य विषं पिबन्ति।।

पाप का फल नहीं चाहते पर पाप यत्न से करते हैं, पुण्य का फल चाहते है पर पुण्य सर्वथा नहीं करते। धर्म का गौण रूप से भी पालन नहीं करते, पाप खूब प्रयत्न से करते हैं। यही बड़ा आश्चर्य है कि मनुष्य अमृत छोड़कर विष का पान कर रहा है।

यदि पाप क्षमा नहीं होते- तो शुभ कर्म क्यों? :- तब, प्रश्न उठता है कि यदि पापों की क्षमा नहीं होती, तब उपासना, ध्यान, भजन, कीर्तन, अनुष्ठान, यज्ञ-योग, कर्मकांड, दान, सेवा, परोपकार इत्यादि विविध *शुभ कर्मों की क्या आवश्यकता है?* संध्या में भी तो महर्षि दयानन्द ने- 'ऋतं च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।' ऋग्० १०/१६०/१-२

इत्यादि मंत्र को ''अघमर्षण'' अर्थात् ''पाप को नाश करनेवाला'' मंत्र कहा है। ऋषि दयानन्द ने ''आर्याभिविनय'' के द्वितीय प्रकाश के तीनों मंत्रों की व्याख्या करते हुए कहा है-

मनसा, वाचा, कर्मणा, अज्ञानेन प्रमादेन वा यत् यत् पापं कृतं मया, तत्तत् सर्व कृपया क्षमस्व।

मन, वाणी, कर्म, अज्ञान व प्रमाद से जो-जो पाप मैंने किए हैं, वह सब कृपा कर क्षमा कर दें। इसलिए पापों की क्षमा मांगना अनुचित नहीं है।

सन्ध्या के ''अघमर्षण'' का अभिप्राय :- सन्ध्या के ''अघमर्षण'' मंत्र के सम्बन्ध में की गई शंका का उत्तर यह है कि इसमें पाप की क्षमा का भाव कहीं नहीं है। ''अघ'' का अर्थ है पाप। ''मर्षण'' शब्द का अर्थ है - दूर करना। ऋषि ने यही अर्थ किया है कि ''कृत पाप को दोबारा न होने देना।'' पाप का यह दूरीकरण ही ''अघमर्षण'' है।

मानव दो प्रकार के पापों का बड़ी जल्दी शिकार हो जाता है- एक अहंकार और दूसरा अवसाद अर्थात् आत्महीनता। इस मंत्र में कहा गया है कि इस विश्व की महानता को देख मानव में जहां अहंकार प्रादुर्भूत न हो वहां एक सूक्ष्मातिसूक्ष्म परमाणु व जल बिन्दु की भी उपयोगिता को देख उसके अंदर अवसाद व ''आत्महीनता'' का भी प्रादुर्भाव न हो। यही ''अघ'' पाप है और इसके ही ''मर्षण'' अर्थात् निवारण की इस मंत्र में प्रार्थना की गयी है। -अध्यात्म योग से साभार

अवश्य मेव भोक्तव्यम् कृतम कर्म शुभाशुभम्।

वैदिक धर्म एवं पं. लेखराम

हम समाज में देखते हैं कि हिन्दू घर में पैदा होने वाला हिन्दू है। मुस्लिम की संतान मुस्लिम व ईसाई के घर जन्मी संतान ईसाई स्वतः ही हो जाती है। परन्तु वेद को धर्म व ज्ञान का आधार मानने वाले आर्यसमाजी की संतान तब तक आर्य अथवा वैदिक धर्मी नहीं बन पाती जब तक वह वैदिक सिद्धांतों को गम्भीरता पूर्वक जानकर मानने लगे। आप कहेंगे कि यह बात तो अन्य मातें पर भी लागू होती है, वहां भी सिद्धांत ज्ञान की आवश्यक ही है। ऐसा नहीं है अन्य मतों में परम्पराएं प्रधान है उनको पालना ही पर्याप्त है।

अविभाजित भारत के पंजाब प्रान्त को झेलम जिले कैसेदपुर ग्राम के पं. तारासिंह के यहां जन्मे बालक लेखराम ने बाल्यकाल से ही अपने प्रत्युत्पन्नमति से परम्पराओं पर प्रश्न करना प्रारम्भ कर दिया और अनेक मतों का साहित्य पढ़ना प्रारम्भ कर दिया था। जब हिन्दू परिवार में जन्मा बालक इस्लामिक साहित्य पढ़ता था जो परिवारी जन मित्रों ने कहा कि क्या इस्लाम से प्रभावित हो गया हो और यदि इस्लाम में सत्य मिले तो आप मुसलमान हो जायेंगे? लेखराम जी ने झट उत्तर दिया हाँ। पं. जी ने कहा यदि दस घड़े पड़े हों और पता करना हो किसका जल अधिक शीतल है तो बिना चखे कैसे पता चले कि किस घड़े का जल मीठा व शीतल है? इसी भांति सभी मतों की पड़ताल करनी चाहिए, यह सच्चे जिज्ञासु की पहचान है। यही जिज्ञासु प्रवृत्ति सत्य-असत्य का निर्णय कराने में सक्षम है। वैदिक धर्म का आधार अंदर से प्रश्न उत्पन्न करना व उनका समाधान खोजता है।

पं. लेखराम जी ने इस्लामिक साहित्य को भी सत्य की खोज के लिए ही पढ़ा, तदुपरान्त काशी से गीताभाष्य, गीता के स्वाध्याय के साथ ही उर्दू लेखक व सुधारक मुन्शी कन्हैया लाल जी अलखधारी का साहित्य देखने की उत्कंठा हुई, मुंशी जी के ग्रंथ मांग लिए, उन्हीं ग्रंथों से ही पं. लेखराम जी को महर्षि दयानन्दजी के बारे में कुछ जानकारी हुई। मुंशी जी भी कुरीतियों पर प्रहार तो करते थे परन्तु पुराने ढेर के पौराणिकों पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता था। पौराणिक गढ़ को तोड़ने के लिए वेद शास्त्र रूपी प्रबल शस्त्रों की आवश्यकता थी जिनको चलाने में एकमात्र कोपीनधारी महर्षि दयानन्द ही प्रवीण थे जो शताब्दियों बाद धरा पर आये थे।

मुन्शी अलखधारी के ग्रंथों से जब ऋषि दयानन्द जी के नाम व काम की जानकारी मिलो तो पं. लेखराम ने अद्वैत मत की समीक्षा प्रारम्भ कर दी परिणामस्वरूप अद्वैत मत को तिलान्जलि दे दी। प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी के शब्दों में एक ब्रह्म जीव बन गया। नवीन वेदान्ती भ्रम से अथवा स्वप्नवाद से अपने को ब्रह्म ही समझते हैं लेखराम जी का भ्रम भंजन हो गया ओर उन्हें पता चल गया कि वह जीव ही है। ऋषि दयानन्द ने दार्शनिक जगत में वैदिक मत त्रैतवाद की पुनः स्थापना कर अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान दिया है। लेखराम जी ने जब ऋषि ग्रंथों का स्वाध्याय किया और ऋषि के साथ पत्र व्यवहार चला तो ऋषि दर्शन की उत्कट

क्या आप राष्ट्र की संस्कृति सभ्यता तथा धर्म के उत्थान के लिए जी रहे हो?

अभिलाषा जगी ओर 16 मई 1881 को अजमेर पहुँच गए। वहां 17 मई को सेठ फतेहमल जी की वाटिका में ऋषि के प्रथम व अंतिम बार दर्शन किये।

ऋषि दर्शन व उनसे मिलने जाना पं. लेखराम जी को वेद व आर्ष ग्रंथों का दीवाना बना दिया ऐसी क्या बात थी कि जो विचारशील मनुष्य ऋषि ग्रंथों से व विचारों से जुड़ता था वह सत्यान्वेषी बनकर मिशनरी बन जाता था। ऐसा ही पं. लेखराम जी के साथ हुआ जिनका झुकाव इस्लाम की ओर हो रहा था, अद्वैतवाद से प्रभावित थे वे त्रैतवाद के समर्थक बनकर ऋषि के पाखण्ड खण्डन मण्डल के ध्वजवाहक बने। पं. जी ने लिखा है जयपुर में एक बंगाली ने प्रश्न किया कि आकाश भी व्यापक है और ब्रह्म भी- दो व्यापक किस प्रकार एक साथ रह सकते हैं। मुझसे इसका उत्तर न बन पाया। मैंने यही प्रश्न स्वामी जी से पूछा। उन्होंने एक पत्थर उठाकर कहा इसमें अग्नि व्याप्त है। मैंने उत्तर दिया व्यापक है, फिर कहा मिट्टी? मैंने कहा व्यापक है, फिर पूछा जल? मैंने कहा वह भी है। फिर पूछा आकाश और वायु? मैंने कहा व्यापक है, फिर पूछा परमात्मा? मैंने कहा वह भी व्यापक है। ऋषिवर ने कहा देखो कितनी चीजें हैं परन्तु सभी इसमें व्यापक हैं। वस्तुतः सत्य यह है जो वस्तु जिससे सूक्ष्म होती है वह भी व्यापक हो सकती है। क्योंकि ब्रह्म अतिसूक्ष्म है इसलिए वह सर्वव्यापक है।

इस प्रकरण को लिखने का उद्देश्य है जिसने उचित जिज्ञासा की वह समाधान तक ले जाएगी यदि पूर्वाग्रह रहित है। ऐसी दृष्टि रखने वाले जिज्ञासु लेखराम पुलिस विभाग की नौकरी छोड़कर पूर्णकालिक प्रचारक के रूप में कूद पड़े। अनेक बाधाओं को सहन कर कष्टों को झेलकर अरबी भाषा व साहित्य के मर्मज्ञ पं. लेखराम संस्कृत का अल्पज्ञान रखने के बावजूद ऋषि मिशन के प्रथम बलिदानी हुए। न पुत्र की चिन्ता की न परिवार की, एक ही चिन्ता थी वैदिक धर्म का प्रचार व वेद विरुद्ध मतों का उन्मूलन। वैदिक धर्म पुनः धरा पर स्थापित हो इस अभिलाषा से पं. लेखराम ने स्थान-स्थान पर जाकर इस्लाम के मौलवियों से अनेक शास्त्रार्थ किए। उनके जीवन में अनेक विशेषताओं में एक विशेषता थी निर्भीकता व विनयशीलता का समन्वय। अन्ततः 6 मार्च 1897 को एक अधर्मी ने पेट में छुरा घोंपकर हत्या कर दी। पं. लेखराम ने प्राण त्यागते समय एक महत्वपूर्ण संदेश दिया। आर्य समाज में तहरीर (लेखन) का कार्य रुकना नहीं चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लिखा था वे धर्मवीर थे, कर्मवीर थे, वे सच्चे ईश्वर भक्त थे, प्रभुप्रिय थे। लेखराम की पुकार। करो वेद प्रचार।

-डॉ. विनय विद्यालंकार

आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में आर्य जगत की पत्र-पत्रिकाओं में छपे लेखों एवं समाचारों को नियम से पढ़कर सुनाये ताकी पत्र-पत्रिकाओं का सही उपयोग हो सके। संभव हो तो मित्रों को भी पढ़ने को दे। संपादक

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में राष्ट्रीय वीरांगना प्रशिक्षण शिविर का समापन

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में दिनांक 1 जून से 7 जून 2014 तक राष्ट्रीय आर्य वीरांगनाओं के सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली टंकारा में किया गया। इसमें गुजरात राज्य के अहमदाबाद, बडौदा, जामनगर, टंकारा, गांधीधाम, सुरेन्द्र नगर, मौरवी, राजकोट की 75 वीरांगनाओं ने भाग लिया।

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल गत 11 वर्षो से देश के विभिन्न प्रान्तों में सफलतापूर्वक कन्याओं को शारीरिक-आत्मिक उन्नति व आत्मरक्षण का प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्म निर्भर व स्वाभिमान से समाज में अपनी अहम भूमिका निभाने हेतु प्रयत्नरत रहा है। शारीरिक उन्नति हेतु व्यायाम, आसन, सूर्यनमस्कार, भूमि नमस्कार आदि का प्रशिक्षण, आत्मरक्षा हेतु जूडो-कराटे, सैन्य प्रशिक्षण, लाठी, मार्शल आर्ट के प्रशिक्षण के साथ-साथ विषम परिस्थितियों में बचाव के उपायों का प्रशिक्षण दिया गया। बौद्धिक उन्नति हेतु वैदिक धर्म, संस्कृति आदि के साथ अन्य विषयों का व्यावहारिक प्रशिक्षण सुयोग्य विद्वानों एवं प्रशिक्षिकाओं द्वारा विधिवत् प्रदान किया गया।

इस महत्त्वपूर्ण शिविर के समापन के मुख्य अतिथि माननीय रणजीत सिंह परमार, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात, विशिष्ट अतिथि श्री एस.बी. रावल जिला कलैक्टर, मौरवी व अध्यक्षता श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक न्यास, टंकारा, गुरुकुल के आचार्य माननीय रामदेव जी द्वारा की गई। इस अवसर पर उद्योगपति माननीय जयदेव आर्य प्रधान आर्यसमाज राजकोट, माननीय प्रेम जी राणा प्रधान आर्यसमाज जामनगर, के साथ-साथ अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

समापन समारोह में शिविरार्थियों द्वारा व्यायाम, आसन, शक्ति प्रदर्शन, लाठी, जूडो-कराटे व विभिन्न स्तूप का भव्य प्रदर्शन किया गया। स्तूप द्वारा शिविरार्थियों ने संदेश दिया कि आर्यसमाज सबको वेद पढ़ने व संध्या-हवन करने का सुंदर उपदेश देता है। इस अवसर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन करनेवाली शिविरार्थिनियों को पारितोषिक वितरण किय गया। समारोह में उपस्थित अतिथियों एवं प्रशिक्षिकाओं का सम्मान किया गया। सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधान संचालिका साध्वी डॉ. उत्तमायति ने सभी शिविरार्थियों को अपने क्षेत्र में शाखा लगाते रहने की प्रतिज्ञा दिलवाई। अंत में श्री हसमुख भाई परमार ने सभी अतिथियों एव प्रशिक्षिकाओं का धन्यवाद किया और बालिकाओं को अभ्यास करते रहने को कहा। शांतिपाठ के साथ शिविर का समापन हुआ अंत में सबने प्रीतिभोज का आनन्द भी लिया।

-'सत्यार्थ दूत' सरोज आर्या, संचालिका आर्यवीरांगना दल राजस्थान

क्या आप देश में बस रहे आदिवासियों तथा धर्म के उत्थान के लिए जी रहे है?

आर्य वीर दल राजस्थान का प्रान्तीय योग-व्यायाम एवं चरित्र निर्माण शिविर भीलवाड़ा में सोल्लास सम्पन्न

आर्य वीर दल, राजस्थान का प्रान्तीय योग-व्यायाम एवं चरित्र निर्माण शिविर आर्य समाज भीलवाड़ा के तत्वावधान में दिनांक 24 मई से 1 जून 2014 तक विद्या कॉलेज पालड़ी (भीलवाड़ा) में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

शिविर में राजस्थान प्रान्त के 20 जिलों एवं झारखण्ड, मध्यप्रदेश, गुजरात आदि से 324 आर्यवीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। 20 आर्यवीरों ने शाखानायक श्रेणी में प्रशिक्षण लिया। निरन्तर नौ दिन चले इस शिविर को आर्यसमाज भीलवाड़ा के प्रधान श्री विजय शर्मा ने दिन-रात एक करके सफल बनाया। आर्य समाज के सदस्यों व पदाधिकारियों का सहयोग अविस्मरणीय रहा। सभी शिविर वासियों को आर.ओ. के पानी की व्यवस्था की गई, उत्तम भोजन एवं आवास तथा सुचारू प्रशिक्षण के लिए यह शिविर हमेशा याद किया जाएगा।

31 मई 2014 को सायं 5.30 बजे से 8 बजे तक भव्य समापन समारोह का आयोजन प्रशिक्षणार्थी आर्यवीरों के व्यायाम-प्रदर्शन के साथ किया गया। सीकर के नव निर्वाचित सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, भीलवाड़ा सांसद सुभाष बहेड़िया, स्थानीय विधायक विट्ठलशंकर अवस्थी, नगर परिषद सभापति अनिल बल्दवा, राजस्थान विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष श्री रामचन्द्र जाट आदि गणमान्य महानुभावों ने समारोह को अपनी गौरवमयी उपस्थिति से सुशोभित किया।

आर्यवीर दल राजस्थान के प्रान्तीय शिविर के समापन समारोह में भीलवाड़ा पधारे सीकर के सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती का सांसद निर्वाचित होने पर आर्य समाज भीलवाड़ा की ओर से आर्यसमाज के प्रधान विजय शर्मा, आर्यवीर दल राजस्थान की ओर से प्रान्तीय मंत्री भवदेव शास्त्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से निम्बाहेड़ा आर्य समाज प्रतिनिधि विक्रम आंजना ने हार्दिक स्वागत किया। इस अवसर पर स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने कहा कि संसद में आर्य समाज की आवाज को सुचारू रूप से उठाने का अवसर महर्षि दयानन्द सरस्वती की कृपा से ही प्राप्त हुआ है।

शिविर में प्रधान संचालक डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती, प्रान्तीय संचालक सत्यवीर आर्य, कार्यकारी प्रान्तीय संचालक देवेन्द्र शास्त्री, प्रान्तीय महामंत्री भवदेव शास्त्री एवं अजमेर संभाग संचालक यतीन्द्र शास्त्री आदि का सानिध्य भी प्राप्त हुआ।

प्रशिक्षकों में श्री भैरोंसिंह (म.प्र.), पंकज आर्य (जिला संचालक, अजमेर), जीवनलाल आर्य (जिला संचालक, उदयपुर), दिनेश आर्य (जिला संचालक, चित्तौड़गढ़), लोकेश आर्य, मनोज आर्य, राजमल आर्य, सत्यनारायण शास्त्री, पूनम शास्त्री, भागचन्द आर्य, प्रेमवीर पिनवाड़ा (सिरोही), लेखराज आर्य आदि थे।

श्री सतीश वासु (खैरथल), दीपक शस्त्री (संचालक जयपुर), श्री सुरेन्द्र आर्य, भूपेन्द्र टोड़ावाल, दिनेश आर्य (संचालक जिला भीलवाड़ा) हीरालाल (सोजत), कैलाश आर्य, गोविन्द रायला, सत्यवीर आर्य (जिला संचालक, भरतपुर) आदि का सहयोग सराहनीय रहा।

नोट- शीतकालीन शिविर 24 से 31 दिसम्बर 2014 तक आर्य समाज सुमेरपुर जिला पाली में लगाया जायेगा।

-सत्यवीर आर्य, प्रान्तीय संचालक

आर्य समाज मगरा पूंजला, जोधपुर के वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज मगरा पूंजला के वार्षिक चुनाव दिनांक 25 मई 2014 को श्री ब्रह्मसिंह की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए जो निम्न प्रकार से है-

संरक्षक- श्री जगदीश सिंह जी आर्य, प्रधान- श्री प्रेमसिंह जी साँखला
उप प्रधान- श्री हरीसिंह जी साँखला, मंत्री- श्री जयसिंह भाटी
उपमंत्री- श्री हुकमसिह जी साँखला, कोषाध्यक्ष- श्री ब्रह्मसिंह जी परिहार
पुस्तकालयाध्यक्ष- श्री हंसराज जी गहलोत, प्रचार मंत्री- श्री अर्जुनसिंह जी गहलोत
अंतरंग सदस्य- श्री भीकसिंह जी गहलोत, श्री महेश जी गहलोत, श्री प्रकाश जी साँखला, श्री सम्पत राज जी देवड़ा
विशेष आमंत्रित सदस्य- श्री महेन्द्र सिंह जी टाक, एडवोकेट

नोट- संरक्षक श्री जगदीश सिंह जी आर्य 4 मई 1948 से सेवाकार्य निरन्तर है। शांति पाठ के बाद कार्यवाही समाप्त की गई।

आर्य समाज, पटेल नगर, गुडगाँव

आर्य समाज पटेल नगर सेक्टर 15 पार्ट-द्वितीय, गुडगाँव का चुनाव श्री धर्मवीर जी अध्यक्षता में सर्वसम्मति से निम्न प्रकार हुआ-

संरक्षक - पदमचन्द आर्य, प्रधान- ईश्वर सिंह दधिया
मंत्राणी- श्रीमती निर्मला देवी, उप मंत्राणी- श्रीमती सावत्री गोयल
उप प्रधान- श्री भुवेश त्यागी, सतीश कुमार लाकडा
कोषाध्यक्ष- वेद प्रकाश मनचंदा एवं श्रीमती सुदर्शन मनचंदा
भण्डारी- विजयवीर, प्रेस सचिव- धर्मवीर सिंह, लेखा निरीक्षक- जयराम वर्मा
अंतरंग सदस्य- प्रेमचन्द आर्य, रामअवतार गोयल, लालचंद गुप्ता, विपिन कुमार अग्रवाल, राजेन्द्र गुप्ता, विकास दहिया, श्रीमती आशु गोयल, श्रीमती मीना कुमारी, श्रीमती सविता रानी ।

यह भी निर्णय हुआ कि नवम्बर 2014 में एक विशाल आर्य महा सम्मेलन किया जावेगा।

-पदम चन्द आर्य

क्या आप अपनी आत्मिक उन्नति से युक्त बौद्धिक और शारीरिक विकास के लिए जी रहे है?

श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ राजस्थान में प्रवेश प्रारम्भ
(पंजीकृत एवं मान्यता प्राप्त)

शिक्षण संस्थान तो अनेक हैं परन्तु श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ अपने ढंग का एक ही है। राजस्थान का सुप्रसिद्ध संस्कार व सदाचार युक्त शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश आरम्भ है। यहाँ विद्यालय एवं छात्रावास का कोई शुल्क नहीं लिया जाता है यहां के विशाल एवं आधुनिक सुविधाओं से युक्त भवनों में प्रदूषित वातावरण से दूर आपका बालक प्राचीन गुरुकुल आश्रम परम्परा के अंतर्गत पवित्र व सदाचारी शिक्षा के साथ सही अर्थों में संस्कारी एवं अनुशासित बनना सीखता है।

हमारी विशेषताएं

* आवास एवं शिक्षा का कोई शुल्क नहीं।
* रियायती दर पर उत्तम भोजन की सुविधा।
* कक्षा एक से ही कम्प्यूटर शिक्षा।
* आधुनिक सुविधा युक्त निःशुल्क छात्रावास।
* पर्याप्त मात्रा में खेल का मैदान।
* अनूठी व अनुपम आश्रम प्रणाली।
* बच्चों के मनोरंजन के लिए सुन्दर पार्क एवं झूले।
* शान्त एवं रमणीय प्राकृतिक सुन्दर वातावरण।
* राजस्थान सरकार द्वारा स्वीकृत पाठ्यक्रम।
* कक्षा 9,10,11,12 तथा शास्त्री एवं आचार्य की परीक्षाएं सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि.वि. वारणासी द्वारा दिलाने की उत्तम व्यवस्था।

आप भी अपने बालक को मेधावी, सदाचारी, संस्कारवान एवं अनुशासित बनाने के लिए शीघ्र ही श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश करा बालकों के भविष्य की चिन्ता से मुक्त हो जाईये।

स्थान सीमित। अन्य विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें-
प्राचार्य श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ राजस्थान, बड़ी रेल्वे लाईन के पास, रेल्वे कॉलोनी, चित्तौड़गढ़ (राज.) मो. 09414396017

राष्ट्रभाषा हिन्दी संबंधी तथ्य

* भारत में लगभग 55 करोड़ जनसख्या हिन्दी भाषा बोल सकती है, समझ सकती है, तथा लिख-पढ़ सकती है, जबकि भारत की अन्य कोई भाषा ऐसी नहीं है, जिसे दस करोड़ से भी अधिक लोगों द्वारा लिखा, पढ़ा और समझा जाता है।
* हिन्दी भाषा दुनिया की समस्त भाषाओं में सर्वश्रेष्ठ भाषा है, क्योंकि इसमें लगभग ढाई लाख शब्दों का भंडार है, जबकि अंग्रेजी में मूल शब्दों की संख्या दस हजार है।
* संसार में हिन्दी ऐसी भाषा है, जिसे जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है,जबकि अंग्रेजी आदि अन्य भाषाओं में यह क्षमता नहीं है।
* भारत के बाहर लगभग 33 देशों में हिन्दी पढ़ाई जाती है तथा संसार के लगभग 130 विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग विद्यमान हैं।
* संसार में हिन्दी ही मात्र एक ऐसी भाषा है, जिसमें किसी भी भाषा का ठीक-ठीक अनुवाद हो सकता है।

आर्य समाज गाँव की ओर

आर्य समाज रामपुरा कोटा (राजस्थान) द्वारा 116वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 6 जून 2014 से 15 जून 2014 तक मनाया गया। 10 दिवसीय कार्यक्रम में इस बार 9 कार्यक्रम गाँवों में रखे गये तथा महर्षि दयानन्द एवं वेदवाणी को जन-जन तक पहुँचाने का एक ऐतिहासिक कार्य किया। क्योंकि राजस्थान के जिला कोटा, बूँदी एवं बाराँ के जिन गाँवों में कार्यक्रम हुए और यह पाया कि अभी तक जनता आर्यसमाज एवं वेद के बारे में अनभिज्ञ है। पहली बार जनता ने जाना कि आर्य समाज भी एक संस्था है जो महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित है तथा ईश्वरीय वाणी वेद के बारे में जानकारी देती है। कुछ व्यक्ति 'गायत्री यज्ञ' की चर्चा करते जरूर पाये गये।

आर्य समाज रामपुरा ने बैठक कर एक टीम बनाई गयी तथा टीम का संयोजक श्री राम प्रसाद याज्ञिक को बनाया गया तथा आर्य समाज के प्रधान श्री कैलाश बाहेती, मंत्री श्री रमेश चन्द ने कार्यक्रम संचालन में पूर्ण योगदान दिया। एक टाटा मैजिक को किराया पर लिया जिसमें टीम सदस्य, कैलाश बाहेती, रमेश चन्द्र गोस्वामी, रामप्रसाद याज्ञिक श्री चंद गुप्ता, चन्द्र मोहन कुशवाहा, प्रभूसिंह कुशवाहा, कँवर लाल सुमन, हरिदत्त शर्मा (उप प्रधान प्रांतीय सभा) सायं चार बजे तपती गर्मी में कोटा से निकलते तथा कार्यक्रम समाप्ति पश्चात लगभग 12 बजे तक कोटा वापस पहुँचते थे।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्र सिंह एवं उनके सहायक श्री लेखराज शर्मा ने भजनों एवं उपदेशक के माध्यम से गांव में प्रचलित कुरीतियों पर प्रहार किया, ईश्वर स्वरूप एवं धर्म के ऊपर बताया। महिलाओं पर ऋषि का उपकार बताया एवं जाति-पाति, छुआ-छूत एवं शूद्र की विवेचना कर सटीक उदाहरण प्रस्तुत किये तथा गाँव वालों को मंत्रमुग्ध कर दिया। सभी गांवों में महिला व पुरुष, नौजवान अच्छी संख्या में उपस्थित हुए। दिनांक 12 जून 2014 को गंधीफली ग्राम में तो लगभग 200 महिला-पुरुष एवं नौजवान कार्यक्रम में उपस्थित थे।

कोटा क्षेत्र के विद्वान श्री बुद्धिचंद, अग्निमित्र ने भी एक दो कार्यक्रम में सिरकत की तथा प्रवचन किये। जिला प्रधान श्री अर्जुन देव ने भी समय निकालकर दो कार्यक्रमों में उपस्थित हुए।

कुल मिलाकर एक सफल आयोजन रहा तथा एक दो गांव से प्रतिक्रिया आई है कि वह फिर से कार्यक्रम कराना चाहते हैं, जिसके लिए प्रयास जारी है चूंकि प्रहरी की तरह मैं सभी गांवों में साथ रहा हूँ अतः यह आँखों देखी रिपोर्ट प्रस्तुत है जिसे संक्षिप्त किया गया है। - हरिदत्त शर्मा

एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर है। सब उन्नति का केन्द्र स्थान ऐक्य है। जहाँ भाषा, भाव और भावना में एकता आ जाय, वहाँ सागर में नदियों की भाँति सारे सुख एक-एक करके प्रवेश करने लगते हैं। - महर्षि दयानन्द

अपने आपको किसी विद्या से निपुण बनाकर समाज व राष्ट्र को किसी भी ईकाई की कुछ विशिष्ट गुणों या उपलब्धियों से सेवा करना आपका उद्देश्य है या नहीं?

क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान है, यदि है तो क्यो दिया ?

क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान है? यह प्रश्न हर चिन्तनशील व मननशील व्यक्ति के विचार में आता है, कि ईश्वर जब निराकार है और अजन्मा है तो उसने कैसे तो जन्म लिया होगा और कैसे वेदज्ञान को सुनाया होगा। वेदज्ञान सुनाने के लिए तो ईश्वर को जन्म भी लेना पड़ा होगा और साकार रूप में मुख से सुनाया भी होगा। बिना मुख तो कोई व्यक्ति कुछ भी सुना नहीं सकता है। किसी ज्ञान को सुनाने के लिए शरीर का होना और मुख का होना बहुत जरूरी हैं। इसलिए यह ज्ञान ईश्वर का न होकर ऋषि-मुनियों का दिया हुआ ज्ञान होना चाहिए। परन्तु यह ज्ञान ईश्वर का ही दिया हुआ है, इसके पीछे कारण यह है कि हम जो सृष्टि देखते है, यह ठीक वैसी ही है जैसा सृष्टि के सम्बन्ध में वेदों में लिखा है। जब सृष्टि को ईश्वर ने बनाया है तो यह जरूरी है कि वेदों को भी ईश्वर ने ही बनाया है। दोनों की एक रूपता यह सिद्ध करती है कि दोनों को ही ईश्वर ने बनाया है। यह सर्व विदित है कि मनुष्य चाहे कितना भी महान हो, ऋषि-मुनि हो, पर सृष्टि को नहीं बना सकता। सृष्टि को बनाने वाला सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्व शक्तिमान होना आवश्यक है। इसलिये ईश्वर में ये तीनों गुण होने से, ईश्वर ने ही यह सृष्टि रची है और ईश्वर ने ही चारों वेदों को बनाया है।

अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर ने वेदज्ञान मनुष्यों को कैसे सुनाया। इसके लिए महर्षि दयानन्द अपने अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखते है कि सृष्टि उत्पन्न करने के बाद यानी पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी आदि बनाने के बाद ईश्वर ने तिब्बत के पठार पर एक कृत्रिम गर्भाशय बनाकर उसमें युवा स्त्री-पुरुष पैदा किये जिससे आगे की सृष्टि चलती रहे। उसी समय चार ऋषि जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं, इनको क्रमशः प्रकाशित किया और उनके मुख से उच्चारित करवाया। वैसे तो इन वेदों को उपस्थित सभी स्त्री-पुरुषों ने सुना पर ब्रह्म ऋषि जो सबसे अधिक बुद्धिमान व योग्य थे उसने चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और वह अन्य लोगों को वेद के मंत्रों को अर्थ सहित सुनाता रहा जैसा उन चारों ऋषियों ने सुनाया था। फिर अन्य लोग भी अपने पुत्र- पौत्रों को तथा शिष्यों को सुनाते रहे। इस प्रकार सुनाना और सुनने का क्रम लाखों-करोड़ों वर्षों तक चलता रहा। जब स्याही, कलम व दवात आदि का आविष्कार हो गया तब इनको चार ग्रंथों में लिपिबद्ध कर दिया गया। इसीलिए वेदों को श्रुति भी कहते है यानी सुनाना-सुनना की प्रथा से चला हुआ ज्ञान। काफी वेद-मंत्रों में ऋषियों के नाम भी लिखे मिलते हैं, इसी से लोगों को भ्रम हुआ कि वेद, ऋषि-मुनियों के बनाये हुए है। पर वे ऋषि उन मंत्रों को बनाने वाले नहीं है पर उन मंत्रों के दृष्टा है जिन्होंने उन मंत्रों को पूरी तरह समझा था तथा आत्मसात् किया था। वे ऋषि उन मंत्रों के निर्माता नहीं, बल्कि दृष्टा हैं।

अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर ने वेद क्यों बनाये। वेदों को बनाने की उसको क्या आवश्यकता पड़ी। इसका उत्तर यह है कि ज्ञान दो किस्म का होता है। एक स्वभाविक दूसरा नैमित्तिक। स्वाभाविक यानी साधारण ज्ञान वह होता है जो ईश्वर की तरह से सभी जीवों को प्रदत्त है। इस ज्ञान से जीव अपने नित्य कर्म करता है यानी खाना-पीना, बैठना-उठना, सोना-जागना तथा संतान उत्पन्न करना आदि। यह ज्ञान पशु-पक्षियों व कीट-पतंगों में अधिक और मनुष्यों में कम होता है। कारण पशु-पक्षी इसी ज्ञान से अपना पूरा जीवन व्यतीत करते हैं। इस ज्ञान से किये कर्मों का फल ईश्वर नहीं देता कारण यह तो जीव को अपना जीवन चलाने के लिए करने ही पड़ते हैं। दूसरा ज्ञान है नैमित्तिक ज्ञान जो सिखाने से सीखा जाता है। बगैर सिखाये यह ज्ञान नहीं आता। यह ज्ञान मनुष्यों में अधिक और पशु-पक्षियों में कम होता है कारण पशु-पक्षियों को इस ज्ञान की जरूरत बहुत कम पड़ती है। जब हम किसी कुत्ते को बुलाकर रोटी देते है तो कुत्ता बड़ी प्रसन्नता से आकर रोटी ले जाता है और लेकर शांति से बिना भय के रोटी को खाता है। पर हम देखते है कि जब कुत्ता चोरी करके रोटी लेता है तो वह दुबक कर मालिक की निगाह से बचकर जाने की कोशिश करता है। कारण उसको यह पता है कि यह रोटी मैंने मालिक की बिना इच्छा के चुराकर ली है। यह उसका नैमित्तिक ज्ञान है। परन्तु मनुष्य में नैमित्तिक ज्ञान अधिक होता है। वह सिखाने से ही सीखता है और उसमें स्वाभाविक ज्ञान कम है। इसका उदाहरण यह है कि कुत्ते का बच्चा पैदा होते ही पानी में तैरना सीख जाता है, उसको सिखाने की जरूरत नहीं है। परन्तु मनुष्य के बच्चे को यदि पानी में छोड़ देते तो वह डूब जायेगा कारण वह सिखाने से सिखता है। उस बच्चे को तैरना सिखाया जाये तो वह तैरकर निकल जायेगा। इसीलिए सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने मनुष्य को सीखने के लिये वेद-ज्ञान दिया । इस वेद-ज्ञान में ईश्वर ने यह बताया है कि ऐ मनुष्य! तुम्हे अपने जीवन को तथा दूसरों के जीवन को सुखी व समृद्धिशाली बनाने के लिए तुम्हें क्या काम करने चाहिये और क्या काम नहीं करने चाहिए।

सब जीवों में मनुष्य योनि सबसे उत्तम, श्रेष्ठ, सुंदर व अंतिम योनि है। इससे अच्छी ईश्वर ने कोई योनि नहीं बनाई। जीव का अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है जो मनुष्य योनि में ही सम्भव है। इसलिए मनुष्य योनि मोक्ष पाने का द्वार है। यहां एक बात और ध्यान देने योग्य है कि योनियां दो किस्म की होती है। एक भोग योनि दूसरी कर्म योनि। भोग योनि में किये कर्मों का फल नहीं मिलता। ये योनियां केवल भोग भोगने के लिए ही मिलती है और कर्म योनि में किये हुए अच्छे व बुरे कर्मो का फल ईश्वर सुख व दुःख के रूप में देता है। पशु-पक्षी, कीट-पतंग व पेड़-पौधे केवल भोग योनियां है। इनमें किये कर्मो का फल नहीं मिलता। मनुष्य योनि भो व कर्म दोनों योनि है। इसमें मनुष्य के लिये अच्छे कर्मो का फल सुख के रूप में ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अधीन है यानी परतंत्र है। मनुष्य जैसा कर्म करना चाहे वैसा कर सकता है, ईश्वर उसकी आत्मा में संकेत जरूर करता है किन्तु अच्छा काम कर बुरा काम मत कर, किन्तु मना नहीं करता। मनुष्य जैसा-जैसा कर्म करता रहेगा ईश्वर वैसा-वैसा ही फल उसको देता रहेगा। यदि मनुष्य अपने पूरे जीवन में परोपकार की भावना से ही काम करेगा, गीता की भाषा में ऐसे कर्मो को निष्काम कर्म कहा गया है तो वह व्यक्ति मोक्ष पाने का अधिकारी बन जाता है। वैसे तो कर्मो की व्याख्या करना बड़ा कठिन है, पर अनुमान

प्रण करते है कि अपनी संस्कृति की शाम नहीं होने देंगे।

यह है कि 50 प्रतिशत से अधिक अच्छे काम करने वाले को साधारण मनुष्य की योनि मिलती है। जितने अच्छे काम अधिक करेगा उतनी ही मनुष्य की योनि अच्छी मिलती जायेगी और पूरे जीवन निष्काम कर्म करेगा तो वह मोक्ष को प्राप्त होगा। ऐसी मोक्ष प्राप्त आत्माओं से भगवान श्री कृष्ण और भगवान देव दयानन्द को माना जा सकता है। जो मनुष्य अपने जीवन में जितने अधिक बुरे काम करेगा उसको उतनी ही पशु-पक्षी, कीट-पतंग की निम्न योनि मिलती रहेगी।

यदि ईश्वर सृष्टि के आरम्भ में वेद-ज्ञान न देता तो मनुष्य भी पशुओं की भाँति अज्ञानी ही बना रह जाता। वेदों के अनुसार चलने से ही मनुष्य अपने जीवन को तथा दूसरों के जीवन को सुखी व सफल बनाता हुआ मोक्ष को प्राप्त होता है जो उसका अंतिम लक्ष्य है जिसके पाने के लिए ईश्वर जीव को उसके कर्मोनुसार मनुष्य योनि में भेजता है। अब भी मनुष्य के बच्चे को जन्म होते ही किसी अज्ञात ईश्वर ने सृष्टि के आदि में जिस प्रकार मनुष्य की पाँच ज्ञानेन्द्रिया है उनमें आखों के लिए अग्नि, नाक के लिए पृथ्वी, कान के लिए आकाश, जिव्हा के लिए पानी और त्वचा के लिए हवा बनाया है उसी प्रकार मनुष्य की बुद्धि व विवेक के लिए वेद-ज्ञान दिया है जिसके अनुसार चलने से वह अपने अंतिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सके।

कृतज्ञ है उस महान् आत्मा देव दयानन्द के जिन्होंने करीब पाँच हजार वर्षो से लुप्त वेद-ज्ञान का अपने जीवन में अनेक दुःखों व कष्टों को सहन करते हुए, कठिन परिश्रम व त्याग, तपस्या के द्वारा संसार में पुनः प्रकाश किया और पूरे मानव-मात्र को मोक्ष प्राप्ति का राह बतला गया। अब हमारा पावन कर्त्तव्य हैं कि महर्षि द्वारा स्थापित आर्य समाज जो वेद-प्रचार व परोपकारी कार्यों को करने में जुटी हुई है, उससे जुड़े और वेद-मार्ग पर चलकर अपना व दूसरों का जीवन सुखी व सफल बनावें।

- खुशहाल चन्द्र आर्य

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा

बिजली कम्पनियों में धूम्रपान व गुटखा का सेवन करने वालों को नौकरी नहीं देने के निर्णय का स्वागत

धूम्रपान व गुटखा का सेवन करने वालों को बिजली कम्पनियों में नौकरी नहीं देने के राजस्थान सरकार के निर्णय की जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा ने सराहना करते हुए मुख्यमंत्री को आभार पत्र प्रेषित किया है। आर्य समाज का कहना है कि यह निर्णय नशे की लत से युवा पीढ़ी को बचाने में मील का पत्थर साबित होगा। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने सरकार द्वारा नौकरी के लिए रखी शर्त कि 'ऊर्जा क्षेत्र की कम्पनियों में सीधी भर्ती में नियुक्त होने वाले अभ्यर्थियों को धूम्रपान व गुटखा सेवन न करने के सम्बंध में अंडरटेकिंग (वचनबद्धता) देनी होगी', को उचित बताते हुए कहा कि यह शर्त दुर्घटनाओं को ही नहीं रोकेगी वरन् स्वस्थ भारत की ओर एक नया कदम भी साबित होगा। क्योंकि गुटखा व धूम्रपान कई बीमारियों की जड़ है वहीं यह नशा कई सामाजिक अपराधों को भी जन्म देता है।

श्री चड्ढा ने कहा कि कई बार देखने व सुनने को मिलता है कि खंभे पर चढ़कर कार्य करने वाले लाइनमेन भी अचानक विद्युत करंट का शिकार होकर प्राणों से हाथ धो बैठता है तो इसमें एक बहुत बड़ा कारण उसका नशे में होना या फिर गुटके या बीड़ी की तलब आना जिस कारण भी इस प्रकार के हादसे हो सकते है।

श्री चड्ढा ने बताया कि धूम्रपान एवं गुटके का सेवन न केवल घातक बीमारियों को जन्म देता है अपितु एक नई समस्या सामाजिक विदूपता इसी की देन है। आप किसी भी सरकारी कार्यालय में चले जाइये। यहां वहां दीवारों के कोनों में पान एवं गुटके की पीक से बदरंग होना। सीढ़ियों की दीवारों का गुटके के थूकने से लाल हो जाना, इसी धूम्रपान एवं गुटके की सामाजिक विदूपता की देन हैं। न केवल सरकारी भवनों अपितु सड़कों, चौराहों एवं रेल तथा बस में से गुटके एवं पान का सेवन करने वालों का बिना सोचें समझे थूकना, धूम्रपान एवं गुटके का वह दुष्प्रभाव है जिसका परिणाम अन्य को भुगतान पड़ता है।

निश्चित रूप से राज्य सरकार का यह कदम अन्यों के लिए भी प्रेरणादायी होगा। तथा सरकार भी इसको न केवल ऊर्जा कंपनियों में अपितु राज्य सरकार के प्रत्येक क्षेत्र में निकलने वाली भर्ती, नियमों में इसे अनिवार्य बनायेगी, तो समाज में एक महान परिवर्तन होगा।

आर्यसमाज रेलवे कॉलोनी के प्रधान हरिदत्त शर्मा, विज्ञाननगर के प्रधान जे.एस. दुबे, रामपुरा के प्रधान कैलाश बाहेती, गायत्री विहार के प्रधान अरविन्द पाण्डेय, तलवंडी के प्रधान रघुराज सिंह, तिलक नगर के प्रधान ओम प्रकाश तापड़िया, भीमगंजमण्डी के प्रधान सूरजमल त्यागी, आर्य विद्वान बिरधीलाल शास्त्री, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, डॉ. के.एल. दिवाकर, रामप्रसाद याज्ञिक, रामदेव शर्मा आदि ने राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया को धन्यवाद ज्ञापित किया है।

-अरविन्द पाण्डेय, प्रचार एवं कार्यालय सचिव

आर्य समाज भीमगंजमण्डी, कोटा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वेद समस्त मानवोपयोगी ज्ञान का भण्डार है इससे मानव जीवन का कल्याण संभव है। वेद में ही सृष्टि का ज्ञान और विज्ञान समाहित है। दुनिया में जितने आविष्कार हुए हैं वेद विज्ञान के आधार पर ही हुए हैं। उक्त विचार सुल्तानपुर (उ.प्र.) से पधारे वैदिक विद्वान डॉ. शिवदत्त पांडे ने व्यक्त किए।

आर्य समाज भीमगंजमण्डी के वार्षिक उत्सव के अंतिम सत्र में उक्त उद्बोधन देते हुए श्री पांडे ने कहा कि वेदों की ओर लौटो। मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) से पधारे भजनोपदेशक नरेश निर्मल ने अपने सुमधुर भजनों के माध्यम से ईश्वर स्तुति एवं सामाजिक चेतना के भजन सुनाये।

आर्य समाज हाड़ौती के विद्वान पं. बिरधीचंद शास्त्री कोटा के विद्वान पं. रामदेव शर्मा तथा सुल्तानपुर से पधारे आचार्य राजेन्द्र जी ने

वीर शहीदों की समाधि बदनाम नहीं होने देंगे।

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014 - 2016 / आर. एन. आई नं. 10471/60

विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हम अपनी संतानों को संस्कारवान एवं सद्गुणी बनाएं।

आर्य समाज के प्रधान सूरजमल त्यागी व मंत्री ओमदत्त गुप्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि तीन दिन चले इस वार्षिक उत्सव में कोटा के समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारी व महिला पुरुष सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

श्री त्यागी ने बताया कि आर्य समाज जिला कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, आर्य समाजों के प्रधान कैलाश बाहेती, हरिदत्त शर्मा, अरविन्द पाण्डेय, जे.एस. दुबे, रघुराज सिंह कर्णावत, ओमप्रकाश आर्य, मंत्री रमेश गोस्वामी, कर्णसिंह आर्य, राकेश चड्ढा, भैरूलाल शर्मा तथा वरिष्ठ आर्यजन डॉ. के.एल. दिवाकर, रामप्रसाद याज्ञिक, बी.एल. त्यागी, रामकृष्ण बलदुआ, श्रीचंद गुप्ता, प्रेमनाथ कौशल, चौधरी गिरिराज सिंह आदि उपस्थित थे।

– सूरजमल त्यागी, प्रधान

आर्य समाज के नेता भारत केसरी लाल लाजपतराय- परिचय

डॉ. भवानीलाल भारतीय

पंजाब केसरी कहलाने वाले लाला लाजपत राय ने अपनी देशभक्ति एवं स्वदेश प्रेम के कारण शीघ्र ही सर्वत्र ख्याति अर्जित कर ली। उनका जन्म 28 जनवरी 1865 को पंजाब के एक वैश्य परिवार में हुआ था। उनके पिता लाला राधाकृष्ण यद्यपि पेशे से अध्यापक थे किन्तु उन पर इस्लाम की विचारधारा का प्रभाव इतना प्रबल था कि वे मुसलमानों के अनेक धार्मिक कर्म-काण्डों का पूर्ण रूप से पालन करते थे। लाजपतराय की शिक्षा लाहौर में हुई जहां से उन्होंने बी.ए. तथा एलएल.बी. की परीक्षाएं पास की तथा वकालत के क्षेत्र में प्रवेश किया।

अपने युवा काल में वे आर्यसमाज लाहौर के सम्पर्क में आये और लाला साईंदास की प्रेरणा से आर्यसमाज के सदस्य बन गये। 30 अक्टूबर 1883 को जब आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द का अजमेर में देहान्त हो गया और लाहौर में आयोजित उनकी शोक सभा में निश्चय किया गया कि उनकी स्मृति को स्थायी रूप देने के लिए लाहौर में एक राष्ट्रीय महाविद्यालय 'दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज' के नाम से खोला जाये, जिसमें वेदादि शास्त्रों, संस्कृत तथा हिन्दी के अतिरिक्त पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान तथा अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य की भी शिक्षा दी जाये। इस कॉलेज की स्थापना के लिए लाला लाजपतराय ने पं. गुरुदत्त तथा अन्य सहयोगियों के साथ देश भ्रमण कर धन एकत्र किया।

लाला लाजपतराय का राजनैतिक जीवन कांग्रेस के अधिवेशनों में भाग लेने से आरम्भ हुआ। यह उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक का का काल था और कांग्रेस ने अपना लक्ष्य प्रेयर व प्रोटेस्ट कोही बनाया था। इधर सर सैयद अहमद खां ने साम्राज्यवाद का समर्थन कर पत्रों में कांग्रेस के कार्यक्रमों का विरोध किया। लालाजी ने एक विस्तृत लेख माला लिखकर सर सैयद के राष्ट्रविरोधी विचारों का तीव्र विरोध किया। इस समय तक कांग्रेस में नरम दल तथा गरमदल के दो संगठन बन गये थे। लालाजी को गरमदल का प्रमुख नेता समझा जाने लगा। उनके सहयोगी बाल गंगाधर तिलक तथा बंगाली नेता विपिनचन्द्र पाल थे। इस बाल,लाल तथा पाल की त्रिपुटी ने भारत की राजनीति में गर्माहट पैदा की तथा देश की आजादी के लिए व्यापक वातावरण तैयार किया।

जब भारत की राजनैतिक दशा का आंकलन करने और नौकरशाही को पुख्ता बनाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने साइमन कमीशन भारत में भेजा तो उसका राष्ट्रीय स्तर पर विरोध हुआ। लाहौर पहुंचने पर रेलवे स्टेशन पर साइमन कमीशन को काले झण्डे दिखाये गये तथा 'साइमन गो बैक' के नारों से स्टेशन परिसर गूंज उठा। इस समय नौकरशाही ने क्रूरता का परिचय दिया और प्रदर्शनकारियों पर डण्डे बरसाये गये। इन्हीं डण्डों की मार को अपनी छाती पर झेलकर 17 नवम्बर 1928 को लालाजी देश की वेदी पर बलिदान हो गये। भारत के राष्ट्रवादी नेताओं तथा देश भक्तों में लाला लाजपतराय का नाम अग्रणी है।

3/5, शंकर कॉलोनी, श्रीगंगानगर

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषित

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004

यूको बैंक A/c No. : 18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पाद[illegible]ति आवश्यक नहीं है।